व्याकरण सुधा

GRADE

8

1. भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण (Language, Dialect, Script and Grammar)

❐ अभ्यास

1. (क) मनुष्य द्वारा अपने विचारों के आपस में या परस्पर आदान-प्रदान के माध्यम को **भाषा** कहा जाता है।

(ख) हम अपने विचारों का आदान-प्रदान बोलकर, लिखकर और पढ़कर करते हैं। यही भाषा के स्वरूप हैं। इस आधार पर भाषा के दो रूप होते हैं—मौखिक भाषा तथा लिखित भाषा।

(i) **मौखिक भाषा**—मौखिक भाषा के अन्तर्गत हम विचारों को मुख से बोलकर प्रकट करते हैं। वार्तालाप, वाद-विवाद, कविता-पाठ, भाषण, नाटक, फिल्म, संगीत आदि में हम भाषा के मौखिक रूप का प्रयोग करते हैं; जैसे—

साक्षी कुछ दिनों पहले ही नैनीताल से घूमकर आई। उसे वहाँ बहुत आनंद आया। उसने अपना सारा अनुभव अवि को सुनाया। अवि ने ध्यान से सुना और कहा कि अगले वर्ष छुट्टियों में वह भी नैनीताल जाएगा।

आपने देखा कि साक्षी ने बोलकर अवि को अपना अनुभव सुनाया। अवि ने सुनकर उत्तर दिया। यही भाषा का मौखिक रूप है।

बोलकर और सुनकर विचारों के आदान-प्रदान को **मौखिक भाषा** कहा जाता है।

(ii) **लिखित भाषा**—लिखित भाषा में हम अपने विचार लिखकर प्रकट करते हैं। लिखित भाषा का प्रयोग पुस्तकों, समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, सूचना-पट आदि में किया जाता है; जैसे—

सभ्य ने एक कविता लिखी। उसने वह कविता माँ को दिखाई। माँ ने कविता पढ़कर सभ्य की खूब प्रशंसा की। यह भाषा का लिखित रूप है।

लिखकर एवं पढ़कर विचारों के आदान-प्रदान को **लिखित भाषा** कहते हैं।

(ग) भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है जबकि बोली का क्षेत्र सीमित होता है।

भाषा के निर्माण के लिए व्याकरण जरूरी है जबकि बोली के साथ ऐसी बाध्यता नहीं है।

साहित्य रचना करते समय भाषा का प्रयोग होता है जबकि बोली का लिखित साहित्य नहीं होता।

(घ) भाषा के लेखन में प्रयोग होने वाले ध्वनि चिह्नों को लिपि कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है।

विश्व की कुछ प्रमुख लिपियाँ निम्नलिखित हैं—

भाषा	**लिपि**
अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन	रोमन
उर्दू	फारसी
तमिल	तमिल
चीनी	चित्रलिपि
पंजाबी	गुरुमुखी
बांग्ला	बांग्ला
अरबी	अरबी
हिन्दी, संस्कृत, नेपाली	देवनागरी

(ङ) प्रत्येक भाषा अपने आप में विशिष्ट होती है। उसके मौखिक एवं लिखित रूप को सही ढंग से समझने हेतु व्याकरण का ज्ञान होना जरूरी है। **व्याकरण** द्वारा हमें भाषा के नियमों की जानकारी प्राप्त होती है। इससे हम भाषा को शुद्ध रूप से बोलना, पढ़ना और लिखना सीखते हैं।

2. (क) भाषा (ख) हिन्दी (ग) ब्राह्मी (घ) सीमित (ङ) साहित्य (च) संस्कृत (छ) तुलसीदास

3. **विदेशी भाषाएँ**—पुर्तगाली, रूसी, चीनी, फ्रैंच
भारतीय भाषाएँ—मराठी, संथाली, तमिल, मलयालम

4.

लिखित भाषा	लिखित भाषा
मौखिक भाषा	मौखिक भाषा
मौखिक भाषा	लिखित भाषा

5. (क) छात्र स्वयं करें।
(ख) छात्र स्वयं करें।

❑

2. वर्ण-विचार (Orthography-Phonoloy)

❑ अभ्यास

1. (क) वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है जिसे खंडित नहीं किया जा सकता। वर्ण को मूल ध्वनि भी कहते हैं। प्रत्येक उच्चरित ध्वनि को लिखने हेतु लिपि चिह्न की जरूरत होती है। इन लिपि चिह्नों को **वर्ण** कहते हैं।

(ख) ह्रस्व स्वर चार हैं—अ, इ, उ, ऋ
दीर्घ स्वर सात हैं—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

(ग) जिन वर्णों का उच्चारण करते समय वायु तेज गति से गरम/ऊष्म होकर निकलती है, वे ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं, श, ष, स, ह चार ऊष्म व्यंजन हैं।

(घ) प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण अर्थात् ङ, ञ, ण, न और म नासिक्य व्यंजन हैं अर्थात् इसका उच्चारण नाक से किया जाता है। इसे **अनुस्वार** के रूप में (ं) लिखा जाता है; जैसे—चंदन, अंश आदि।

अनुनासिक ध्वनियों में हवा मुख के साथ-साथ नाक से निकलती है। इसे दर्शाने हेतु चंद्रबिन्दु (ँ) का चिह्न लगाते हैं; जैसे—आँख, ताँबा आदि।

(ङ) जब दो अलग व्यंजनों के योग से एक नया व्यंजन बनता है, उसे **संयुक्त व्यंजन** कहते हैं। संयुक्त व्यंजनों का पहला व्यंजन हलंत के साथ और दूसरा व्यंजन हलंत रहित होता है। हिन्दी वर्णमाला में चार संयुक्त व्यंजन हैं—क्ष, त्र, ज्ञ और श्र।

क्ष = क् + ष = क्ष — क्षमा, कक्षा

त्र = त् + र = त्र — त्रिशूल, स्त्री

ज्ञ = ज् + ञ = ज्ञ — ज्ञानी, प्रज्ञा

श्र = श् + र = श्र — श्रमिक, अश्रु

2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗
(च) ✗ (छ) ✓

3.

महिमा	चंद्रिका
गौरव	सुगम
प्राचीन	परिश्रम
गलती	शाकाहार

4. (क) मनोज (ख) आशीर्वाद (ग) यशस्वी (घ) उज्ज्वल
(ङ) मोनिका

5.

ढ	=	ढक्कन	गड्ढा	ढाल
ढ़	=	गढ़	बढ़ाई	बढ़ना
ड़	=	बड़ा	लड़ना	पड़ाव
ड	=	डर	ठंड	खंडित

6. भारत = भ् + आ + र् + अ + त् + अ

झंडा = झ् + अ + न् + ड् + आ

संन्यासी = स् + अ + न् + न् + य् + आ + स + ई

दिनेश = द + इ + अ + न् + ए + श् + अ

विद्यालय = व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ

देशभक्त = द + ए + श् + अ + भ् + अ + क् + त् + अ

7. छात्र स्वयं करें।

8. छात्र स्वयं करें।

❑

3. संधि
(Joining Words)

❐ अभ्यास

1. (क) वर्णों के परस्पर मेल से होने वाले परिवर्तन को **संधि** कहते हैं।

(ख) संधि के तीन भेद हैं—

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

1. **स्वर संधि**—दो स्वरों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं; जैसे—

   रमा + ईश = रमेश सुर + ईश = सुरेश

2. **व्यंजन संधि**—किसी व्यंजन के बाद कोई स्वर या व्यंजन आने पर जो परिवर्तन या विकार आता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं, यह तीन प्रकार की होती है—

   (क) व्यंजन का स्वर से मेल

   जैसे— वाक् + ईश = वागीश

   (क + ई)

   (ख) स्वर तथा व्यंजन का मेल

   जैसे— परि + नाम = परिणाम

   (इ + न)

   (ग) व्यंजन का व्यंजन से मेल

   जैसे— सत् + गुण = सद्गुण

   (त् + ग्)

3. **विसर्ग संधि**—विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग के बदले रूप को **विसर्ग संधि** कहते हैं; जैसे—किसी विसर्ग के बाद 'त्' या 'स' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है; जैसे—

   नम: + ते = नमस्ते नि: + संतान = निस्संतान

   नि: + तेज = निस्तेज दु: + साहस = दुस्साहस

(ग) संधि नए शब्दों का उदय होता है और भाषा में निखार आता है।

2.

विद्याभ्यास	चराचर
प्रत्येक	वनोत्सव
रमेश	विधूदय
महौजस्वी	नयन
परमार्थ	सागरोर्मि

3. पर + उपकार — सत् + मार्ग
महा + औषध — यदि + अपि
रवि + इंद्र — आ + छादन
वाक् + जाल — उत् + नीति
मातृ + आज्ञा — सप्त + ऋषि

4.

दीर्घ संधि	**गुण संधि**	**वृद्धि संधि**	**व्यंजन संधि**
सूक्ति	रमेश	तथैव	दिगम्बर
	देवर्षि	महौज	उन्नति
		महौषध	संपूर्ण
		मातैश्वर्य	

5.

अनुच्छेद	व्यंजन संधि
तल्लीन	व्यंजन संधि
भावुक	अयादि संधि
परिमाण	व्यंजन संधि
जगन्नाथ	व्यंजन संधि
सूक्ति	दीर्घ संधि
स्वागत	यण संधि
मनोबल	विसर्ग संधि
निस्संतान	विसर्ग संधि
चतुष्पद	विसर्ग संधि

❑

4. शब्द-विचार (Morphology)

❑ अभ्यास

1. (क) वर्णों के सार्थक समूह को ही **शब्द** कहते हैं; जैसे—
ह् + इ + म् + आ + ल् + अ + य् + अ = हिमालय

(ख) वर्णों का सार्थक समूह **शब्द** कहलाता है। जब किसी शब्द को वाक्य में प्रयोग किया जाता है, तो वह स्वतंत्र नहीं रहता। वह शब्द व्याकरण के नियमों में बँध जाता है, तो पद बन जाता है। लिंग, वचन, कारक और काल के अनुसार उसमें बदलाव आ जाता है।

(ग) तत्सम शब्द संस्कृत के दो शब्दों 'तत्' एवं 'सम्' के संयोग से बना है जिसका अर्थ है उनके (संस्कृत) समान। जिन संस्कृत शब्दों का 'ज्यों का त्यों' हिंदी में प्रयोग किया जाता है, उन्हें **तत्सम शब्द** कहते हैं; जैसे—उत्साह, चंद्र, अर्क, दुग्ध आदि।

(घ) रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद माने गए हैं—

1. रूढ़ 2. यौगिक 3. योगरूढ़

1. **रूढ़ शब्द**—जो शब्द परम्परा से चले आ रहे हैं और जिन्हें खंडों में बाँटा भी नहीं जा सकता, वे शब्द **रूढ़ शब्द** कहलाते हैं; जैसे—रात, सुबह, समय, हाथ आदि।
2. **यौगिक शब्द**—जो शब्द दो या अधिक शब्दों के मेल से बनते हैं और जिन्हें सार्थक खंडों में विभाजित किया जा सकता है, वे **यौगिक शब्द** कहलाते हैं; जैसे—दूतावास, सद्‌गुण, देशभक्ति आदि। यौगिक शब्द **उपसर्ग** और **प्रत्यय** जोड़कर एवं संधि और समास द्‌वारा बनाये जाते हैं।
3. **योगरूढ़ शब्द**—जिस यौगिक शब्द से किसी विशेष अर्थ का बोध होता है, उसे **योगरूढ़ शब्द** कहते हैं अर्थात् जब यौगिक शब्द सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाएँ, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं; जैसे—

हिमालय	—	पर्वत विशेष के अर्थ में
पंकज	—	कमल के अर्थ में
गिरिधर	—	कृष्ण के अर्थ में
दशानन	—	रावण के अर्थ में

(ङ) **विकारी शब्द**—जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन, कारक अथवा काल के कारण परिवर्तित हो जाता है, उन्हें **विकारी शब्द** कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं।

संज्ञा	—	लड़के	लड़की	लड़कों ने
सर्वनाम	—	मैं	मुझे	मेरा
विशेषण	—	काला	काली	काले
क्रिया	—	चलता है	चलते	चलती चला

अविकारी शब्द—जिन शब्दों का रूप कभी नहीं बदलता, जो सदा एक समान रहते हैं, वे **अविकारी शब्द** कहलाते हैं। अविकारी शब्दों को अव्यय भी कहा जाता है; जैसे—

क्रिया-विशेषण	—	आज, यहाँ, वहाँ, धीरे-धीरे आदि।
संबंधबोधक	—	के पास, के अंदर आदि।
समुच्चयबोधक	—	और, क्योंकि, लेकिन, तो, अन्यथा आदि।
विस्मयादिबोधक	—	अरे! ओह! आदि।
निपात	—	ही, भी आदि।

(च) **तद्‌भव**—जो शब्द संस्कृत से हिंदी में आए हैं पर भाषा के विकास के साथ जिनके शब्दों का रूप बदल गया है, उन्हें **तद्‌भव शब्द** कहते हैं। इनका रूप कालांतर में बदल गया है—चाँद, अमृत, खेत, भाग्य, ग्राहक आदि।

2.

अंग्रेजी	**अरबी**	**तुर्की**	**पुर्तगाली**
कॉलेज	इंसाफ	तोप	कमरा
सिनेमा	इनाम	लाश	गमला
रबर	औरत	चाकू	गोदाम
स्कूल	खत	कैंची	चाबी
मोटर	तकदीर	बंदूक	तौलिया

3.

रात	घी
आँसू	अम्मा
मोर	घर
माथा	बहन
अंगूठा	पत्थर

4.

न्याय	प्रयास
अवश्य	निर्णय
विद्यालय	आकाश
प्रात:	विवाह
तुरंत	परिश्रम

5.

तत्सम	विकारी
रूढ़	विदेशी
अंग्रेजी	निरर्थक
तत्सम	यौगिक
विदेशी	फारसी

6.

तत्सम	**तद्भव**
रात्रि	नाखून
हस्त	आँख
पौत्री	मोर
उष्ट्र	दूध
श्वेत	घोड़ा
शत	पोती
दंड	सिर

❑

5. उपसर्ग तथा प्रत्यय
(Prefix and Suffix)

❐ अभ्यास

1. (क) जो शब्दांश किसी मूल शब्द के आरम्भ में जुड़कर उसके अर्थ में बदलाव लाते हैं, वे **उपसर्ग** कहलाते हैं। उदाहरण—

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द रूप**
अति	अधिक	अतिकाल, अतिदेश, अतिरेक

(ख) **उपसर्ग** किसी मूल शब्द के आरम्भ में जुड़कर उसके अर्थ में बदलाव लाते हैं जबकि **प्रत्यय** किसी शब्दांश किसी शब्द अथवा धातु के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

(ग) प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—

(i) **कृत प्रत्यय**—जो प्रत्यय किसी क्रिया के धातु रूप में जुड़कर संज्ञा एवं विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं।

कृत प्रत्यय	**मूल शब्द**	**शब्द रूप**
आई	लड़, पढ़, जोत, लिख	लड़ाई, पढ़ाई, कड़ाई

(ii) **तद्धित प्रत्यय**—जो शब्दांश, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा अव्यय के अंत में साथ जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, उन्हें **तद्धित प्रत्यय** कहते हैं। उदाहरण—

प्रत्यय	**मूल शब्द**	**शब्द रूप**
इक	इतिहास, दिन, मास, समाज	ऐतिहासिक, दैनिक, मासिक, सामाजिक

2. प्रति	प्रतिकार	प्रतिघात	प्रतिशोध
अप	अपयश	अपराध	अपमान
अध	अधखिला	अधमरा	अधपका
ला	लाइलाज	लाचार	लापरवाह
दु	दुबला	दुर्जन	दुखड़ा
बिन	बिन कहे	बिन माँगे	बिन बोया
3. काल	कालक्रम	चर	चरवाहा
कार	कारखाना	जन	जननायक
कर्म	कर्मकार	डर	डरपोक
पुत्र	पुत्रवधू	यश	यशस्वी

4. मान	अनुमान	अभिमान	अपमान	सम्मान
फल	सुफल	कुफल	सफल	विफल
देश	उपदेश	प्रदेश	विदेश	आदेश

बल	सबल	दुर्बल	प्रबल	निर्बल
हार	आहार	उपहार	परिहार	निराहार

5. पारिवारिक — भूतिक
उद्योगिक — मासिक
दैनिक — लौकिक

6. (क) पाँच (ख) स्वतंत्र (ग) आऊ (घ) इन (ङ) ई

❑

6. समास (Compound)

❑ अभ्यास

1. (क) **समास** एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा दो या दो से अधिक शब्दों को जोड़कर शब्द बनाए जाते हैं।

(ख) जिन समास के दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करने पर बीच में 'और', 'तथा', 'एवं', 'या' अथवा लगता हो, वे **द्वंद्व समास** कहलाते हैं; जैसे—

समस्त पद	**विग्रह**	**समस्त पद**	**विग्रह**
सुरासर	सुर या असुर	धर्माधर्म	धर्म या अधर्म
माता-पिता	माता एवं पिता	भाई-बहन	भाई तथा बहन

(ग) जिस समस्त पद का पहला पद संख्यावाचक विशेषण हो और समस्त पद समूह का बोध कराता हो उसे **द्विगु समास** कहते हैं; जैसे—

समस्त पद	**विग्रह**	**समस्त पद**	**विग्रह**
दोराहा	दो राहों का समूह	चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह
त्रिभुज	तीन भुजाओं का समाहार	तिरंगा	तीन रंगों का समूह

जिस समस्तपद में कोई भी पद प्रधान न हो और समस्त पद किसी अन्य पद की ओर संकेत करें उसे **बहुव्रीहि समास** कहते हैं; जैसे—

समस्त पद	**विग्रह**	**समस्तपद**	**विग्रह**
एकदंत	एक है दंत जिसका (गणेश)	श्वेतांबरी	श्वेत है अंबर जिसके (सरस्वती)
त्रिलोचन	तीन नेत्र हैं जिनके (शिव)	मृत्युंजय	मृत्यु को जीता है जिसने (अमर)

(घ) जिन समस्तपदों का पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य हो अथवा एक पद उपमान और दूसरा पद उपमेय होता है, वे **कर्मधारय समास** कहलाते हैं; जैसे—

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
पीतांबर	पीला है जो अंबर (वस्त्र)	श्यामसुंदर	श्याम है जो सुंदर
महाराजा	महान है जो राजा	नीलगगन	नीला है जो गगन

(ङ) प्रश्न 1 का (ग) भाग पढ़िए।

2.

समस्त पद	समास विग्रह	समास भेद
त्रिनेत्र	तीन नेत्रों का समूह	द्विगु समास
आपबीती	आप पर बीती	तत्पुरुष समास
महादेव	महान है जो देव	बहुब्रीहि समास
गंगाजल	गंगा का जल	तत्पुरुष समास
आमरण	मरण तक	अव्ययीभाव समास

3.

द्विगु समास	तत्पुरुष समास	द्वंद्व समास	कर्मधारय समास
नवग्रह	डाकगाड़ी	भाई-बहन	नीलगगन
पंचतंत्र	रेखांकित	हानि-लाभ	महाराजा
सप्तर्षि	गगनचुम्बी	माता-पिता	विद्याधन

4. नवरत्न, त्रिभुज, तिरंगा, सप्तर्षि

5.

	समस्त पद	समास भेद
(क) रात ही रात में	रातोंरात	अव्ययीभाव
(ख) काली है जो मिर्च	काली मिर्च	कर्मधारय
(ग) शक्ति के अनुसार	शक्तिनुसार	अव्ययीभाव
(घ) देश को गया हुआ	देशगत	तत्पुरुष
(ङ) धन से हीन	धनहीन	तत्पुरुष
(च) खट्टा और मीठा	खट्टा-मीठा	द्वंद्व
(छ) ग्रंथ को लिखने वाला	ग्रंथकार	तत्पुरुष

❑

7. संज्ञा (Noun)

❑ अभ्यास

1. (क) किसी वस्तु, प्राणी, स्थान और भाव के नाम को **संज्ञा** कहते हैं। उदाहरण—पुस्तक, शेर, जयपुर और सुंदरता।

(ख) संज्ञा के पाँच भेद होते हैं—(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा, (ii) जातिवाचक संज्ञा, (iii) भाववाचक संज्ञा, (iv) समूहवाचक संज्ञा, (v) द्रव्यवाचक संज्ञा।

(ग) जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध हो, उसे **व्यक्तिवाचक** संज्ञा कहते हैं; जैसे—

(क) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।
(ख) गोदान हिन्दी का प्रसिद्ध उपन्यास है।
जिस शब्द में किसी वस्तु, स्थान, व्यक्ति या प्राणी की पूरी जाति का बोध हो, उसे **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—
(क) तितलियाँ उड़ रही हैं।
(ख) लड़का क्रिकेट खेल रहा है।
तितली और लड़का **जातिवाचक संज्ञाएँ** हैं क्योंकि इनसे इनकी सम्पूर्ण जाति का बोध होता है।

(घ) जिस शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, स्थिति, दशा या भाव का बोध हो, उसे **भाववाचक** संज्ञा कहते हैं।
भाववाचक संज्ञा को हम केवल अनुभव कर सकते हैं, देख या छू नहीं सकते। यह संज्ञा का अमूर्त रूप है; जैसे—
(क) लक्ष्मीबाई वीरता की प्रतीक हैं।
(ख) हमें ईमानदारी से जीना चाहिए।
उपरोक्त वाक्यों में वीरता और ईमानदारी भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

2.

सरल	—	सरलता	मम	—	ममत्व
गरीब	—	गरीबी	बाहर	—	बाहरी
क्षत्रिय	—	क्षात्रियत्व	संस्कृति	—	संस्कार
उचित	—	औचित्य	कठिन	—	कठिनता

3.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**	**भाववाचक संज्ञा**
इशान		
किशन	फूल	मूर्खता
पी०वी० सिंधु	झरना	पूजा
रामायण	पक्षी	लिखावट
कानपुर	दरवाजा	चुनाव
कावेरी	मूर्ति	उतार

4. (क) व्यक्तिवाचक (ख) भाववाचक (ग) द्रव्यवाचक (घ) समूहवाचक (ङ) व्यक्तिवाचक

❑

8. लिंग (Gender)

❐ अभ्यास

1. (क) शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह शब्द पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे **लिंग** कहा जाता है।

लिंग के दो भेद हैं—

(i) पुल्लिग (ii) स्त्रीलिंग

(ख) **स्त्रीलिंग**—स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द **स्त्रीलिंग** कहलाते हैं; जैसे—चुहिया, लड़की, कुम्हारन, घोड़ी, शेरनी, हथिनी, लेखिका, बच्ची आदि।

पुल्लिग—पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द **पुल्लिग** कहलाते हैं; जैसे—चूहा, लड़का, कुम्हार, घोड़ा, शेर, हाथी, लेखक, बच्चा आदि।

(ग) प्राणीवाचक शब्दों के लिंग का निर्धारण उनके अर्थ के अनुसार होता है जबकि अप्राणीवाचक (निर्जीव वस्तुओं, पदार्थों) के लिंग का निर्णय उसके रूप के आधार पर होता है।

2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓
(च) ✗

3.

शेर	—	शेरनी	वीर	—	वीरांगना
विधुर	—	विधवा	क्षत्रिय	—	क्षत्राणी
ठाकुर	—	ठकुराइन	मर्द	—	औरत
भगवान	—	भगवती	बिलाव	—	बिल्ली

4.

वधू	—	वर	वीरांगना	—	वीर
कवयित्री	—	कवि	बहन	—	भाई
तपस्विनी	—	तपस्वी	विदुषी	—	विद्वान

5. (क) उसके पैर की उंगली कट गई।
(ख) हमारी मालिन बहुत अच्छी है।
(ग) कमरे की खिड़की खुली रह गई।
(घ) वंशिका ने दौड़ में तीन पदक जीते।
(ङ) आज मैंने तीन रोटी खायी।
(च) उसने सोने की अंगूठी पहनी है।
(छ) उसे हिन्दी बोलनी नहीं आती है।

6. छात्र स्वयं करें।

❑

9. वचन (Number)

❑ अभ्यास

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे **वचन** कहते हैं।

वचन के दो भेद होते हैं—

(i) एकवचन (ii) बहुवचन

(i) **एकवचन**—शब्द के जिस रूप से उसके एक व्यक्ति, वस्तु, स्थान या प्राणी होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—तोता, बिल्ली, संतरा, मूर्ति, लड़की आदि।

(ii) **बहुवचन**—शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—तोते, बिल्लियाँ, संतरें, मूर्तियाँ, लड़कियाँ आदि।

(ख) **आसमान**—आसमान में बादल छाये हैं।

पृथ्वी—पृथ्वी पर हरियाली छायी हुई है।

वर्षा—वर्षा कृषि के लिए वरदान है।

सत्य—सत्य बोलना हमारा परम कर्त्तव्य है।

परोपकार—परोपकार करके ही हम मानव कहलाने के अधिकारी बनते हैं।

2. (क) दुकानदारों ने कागज की पुड़ियों में सामान दिया।

(ख) मजदूर लोग पंक्तियों में बैठे थे।

(ग) कमरों में कूलर चल रहे हैं।

(घ) मछुआरे नावों में बैठकर मछलियाँ पकड़ रहे हैं।

(ङ) दादाजी ने मजेदार किस्से सुनायें।

(च) मजदूर लोग खाट पर सो रहे हैं।

(छ) बस अड्डे पर बसें आयीं।

3.

बहू	—	बहुएँ	चूहा	—	चूहे
जूता	—	जूते	बेटा	—	बेटे
संतरा	—	संतरे	कविता	—	कविताएँ
झील	—	झीलें	दरवाजा	—	दरवाजे

4.

वस्तुएँ	—	बहुवचन	गधा	—	एकवचन
कुटिया	—	एकवचन	बहनें	—	बहुवचन
आँख	—	एकवचन	डिबिया	—	एकवचन
नीति	—	एकवचन	गौ	—	एकवचन

5. (क) लोगों (ख) युवा वर्ग (ग) विधियाँ

(घ) दर्शकों, कुर्सियाँ (ङ) पगड़ियाँ

❑

10. कारक (Case)

❒ अभ्यास

1. (क) संज्ञा एवं सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे **कारक** कहते हैं।

जैसे—अभय ने गाना गाया। इस वाक्य में कारक (कर्ता)

अभय ने (विभक्ति, परसर्ग) गाना गाया।

(ख) कारक के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं—

	कारक	**परसर्ग/विभक्ति**
(i)	कर्ता	ने
(ii)	कर्म	को
(iii)	करण	से/के द्वारा
(iv)	संप्रदान	को, के लिए
(v)	अपादान	से (अलग होना)
(vi)	संबंध	का, की, के, रा, री, रे
(vii)	अधिकरण	में/पर
(viii)	संबोधन	ए, हे, हो, अरे, ओ

(ग) **कर्म कारक** (को)—वाक्य की क्रिया का फल जिस संज्ञा पर पड़ता है, उसे **कर्म कारक** कहते हैं। कर्म कारक की विभक्ति को है; जैसे—

अंश पुस्तक पढ़ता है रितिक ने अनुपम को पुस्तक दी।

इन वाक्यों में पुस्तक तथा अनुपम कर्म कारक हैं।

विशेष—परसर्ग रहित वाक्य में कर्म कारक की पहचान हेतु क्रिया के साथ क्या जोड़कर प्रश्न करते हैं। 'क्या' जो उत्तर मिलता है, वह क्रिया का कर्म देता है।

जैसे—अंश पुस्तक पढ़ता है।

प्रश्न—क्या पढ़ता है? उत्तर—पुस्तक

संप्रदान कारक (को, के लिए)—वाक्य का कर्ता जिसके लिए कुछ काम करता है या जिसे कुछ देता है, उसे **संप्रदान कारक** कहा जाता है। संप्रदान कारक की विभक्ति के लिए तथा को है; जैसे—

वंशिका ने नव्या के लिए उपहार खरीदा।

भिखारी को भिक्षा दे दो।

विशेष—संप्रदान कारक में हमेशा दान का भाव अर्थात् जिसको कुछ दिया जाए का भाव होता है। इसकी पहचान के लिए वाक्य के साथ 'किसको', 'किसके लिए' और 'किस हेतु' लगाकर प्रश्न करते हैं। यदि उत्तर मिलता है तो वह **संप्रदान कारक** होता है।

2. (क) से (ख) के लिए (ग) पर (घ) ने, का

3.

	लिंग	**वचन**	**कारक**
(क)	स्त्रीलिंग	एकवचन	अधिकरण
(ख)	स्त्रीलिंग	एकवचन	संप्रदान
(ग)	पुल्लिग	एकवचन	करण
(घ)	पुल्लिग	बहुवचन	संबोधन

4.

कारक	**कारक-चिह्न**	**उदाहरण**
कर्त्ता	ने	छात्र ने
कर्म	को	छात्र को
करण	से/के द्वारा	छात्र से/के द्वारा
संप्रदान	को, के लिए	छात्र को/के लिए
अपादान	से (अलग होना)	छात्र से (अलग होना)
अधिकरण	में/पर	छात्र में/पर

5. छात्र स्वयं करें।

❑

11. सर्वनाम (Pronoun)

❑ अभ्यास

1. (क) जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, वे **सर्वनाम** कहलाते हैं।

(ख) **सर्वनाम** के उदाहरण—

मैं सेब खा रहा हूँ। तुम मेरे साथ खेलोगे।

वह बाजार जा रहा है।

इन तीनों वाक्यों में मैं, तुम और वह सर्वनाम शब्दों का प्रयोग हुआ है जो बोलने वाले, सुनने वाले और अन्य के लिए प्रयोग हुए हैं।

(ग) **निश्चयवाचक सर्वनाम** (यह, ये, वह, वे)—जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करें, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसे **संकेतवाचक सर्वनाम** भी कहा जाता है; जैसे—वह नया स्कूल मेरा है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई, कुछ, कहीं)—जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी अनिश्चित वस्तु, व्यक्ति और स्थान हेतु किया जाता है, उसे **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं, जैसे—

माँ, मुझे कुछ खाना है। किसी एक को बुलाओ।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✗)

3. (क) मैंने, उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम
(ख) किससे, प्रश्नवाचक सर्वनाम
(ग) कहीं, अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(घ) जो, सो, संबंधवाचक सर्वनाम

4. (क) हमें कल आगरा जाना है।
(ख) उसका सब कुछ लुट गया।
(ग) तुम्हें क्या चाहिए?
(घ) उसके प्राण निकल गए।
(ङ) मुझे वहाँ नहीं जाना है।

❑

12. विशेषण (Adjective)

❑ अभ्यास

1. (क) संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को **विशेषण** कहते हैं। जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे **विशेष्य** कहते हैं।

विशेषण	**विशेष्य**
काला	बस्ता
तीन	पुस्तकें

(ख) विशेषण के चार भेद होते हैं—
(i) गुणवाचक विशेषण
(ii) संख्यावाचक विशेषण
(iii) परिमाणवाचक विशेषण
(iv) सार्वनामिक विशेषण

(ग) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं, लेकिन जो सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले जुड़कर उसकी विशेषता बताते हैं, वे **सार्वनामिक विशेषण** कहलाते हैं। सर्वनाम शब्द का वाक्य में अपना निश्चित अर्थ होता है और वे अपने आप में पूर्ण होते हैं। **सार्वनामिक विशेषण** शब्द अपने विशेष्य के बिना अधूरे हैं; क्योंकि इनका प्रयोग विशेषण की तरह होता है। जबकि सर्वनाम शब्द हटा दिया जाए तो वाक्य निरर्थक हो जाता है; जैसे—

सर्वनाम	**सार्वनामिक विशेषण**
वह एक अच्छा खिलाड़ी है।	वह घर मेरा है।
मोटी पुस्तक मेरी है।	मेरी पुस्तक मोटी है।

(घ) **संख्यावाचक विशेषण**—जिन शब्दों से संज्ञा एवं सर्वनाम की संख्या का बोध हो, उन्हें **संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं; जैसे—
नित्या **आठवीं** कक्षा में पढ़ती है।
परिमाणवाचक विशेषण—जो विशेषण शब्द संज्ञा शब्दों की मात्रा अथवा परिमाण बताते हैं, उन्हें **परिमाणवाचक विशेषण** कहते हैं; जैसे—यह साड़ी पाँच मीटर की है।

2. (क) गुणवाचक (ख) परिमाणवाचक (ग) अनिश्चित संख्यावाचक
(घ) सर्वनामिक

3. (क) बाहर — (iv) स्थान (गुणवाचक)
(ख) खुरदरा — (i) स्पर्श (गुणवाचक)
(ग) लाल — (ii) रंग-रूप (गुणवाचक)
(घ) पश्चिमी — (iii) दिशा (गुणवाचक)

4. (ख) महानतर (ग) उच्चतर (ङ) प्रियतर

❑

13. क्रिया, काल (Verb, Tense)

❑ अभ्यास

1. (क) किसी काम के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को **क्रिया** कहते हैं। उदाहरण—लड़का खेल रहा है। इसमें खेलना क्रिया है।

(ख) **अकर्मक क्रिया**—जिस क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर कर्त्ता पर पड़ता है अर्थात् वाक्य में जिस क्रिया का कोई कर्म नहीं होता, वह क्रिया **अकर्मक क्रिया** कहलाती है; जैसे—
(i) बच्चे हँस रहे हैं।
(ii) रिया सो रही है।
(iii) सवेरे जल्दी उठा करो।
(iv) नीरज तेज भागता है।
इन वाक्यों में क्रिया का प्रभाव कर्त्ता पर पड़ रहा है अर्थात् यहाँ कर्म नहीं है। अत: ये **अकर्मक क्रियाएँ** हैं।
विशेष—अकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले क्या, किसे लगाकर प्रश्न किया जाता है।
कुछ **अकर्मक क्रियाएँ** हैं—उठना, बैठना, रोना, जागना, आना, जाना, हँसना, आदि।

(ग) **सकर्मक क्रिया**—जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है अर्थात् वाक्य में जिस क्रिया का कर्म होता है, उसे **सकर्मक क्रिया** कहते हैं; जैसे—

(i) मम्मी खाना बना रही है। (ii) ड्राइवर गाड़ी चला रहा है।

सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती हैं—(i) एककर्मक क्रिया (ii) द्विकर्मक क्रिया।

(i) **एककर्मक क्रिया**— जिस क्रिया का केवल एक कर्म होता है, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—

(a) दादाजी अखबार पढ़ रहे हैं।

(b) मजदूर सड़क बना रहे हैं।

(ii) **द्विकर्मक क्रिया**—जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—

(a) माली पौधों को पानी से सींच रहा है।

(b) नर्स रोगी को दवा पिला रही है।

(घ) काल के तीन भेद होते हैं—

(i) **वर्तमान काल**—वर्षा हो रही है।

(ii) **भूतकाल**—कल वर्षा हुई।

(iii) **भविष्यत् काल**—कल वर्षा होगी।

(ङ) भूतकाल के छह भेद हैं—

(क) सामान्य भूत (ख) आसन्न भूत (ग) अपूर्ण भूत

(घ) पूर्ण भूत (ङ) संदिग्ध भूत (च) हेतुहेतुमद भूत

(क) **सामान्य भूत**—क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में होने का बोध हो उसे सामान्य भूत कहा जाता है; जैसे—

अमिता ने चित्र बनाया।

(ख) **आसन्न भूत**—आसन्न अर्थात् निकट/पास। जब क्रिया कुछ समय पहले ही पूर्ण हुई हो, उसे आसन्न भूत कहते हैं; जैसे—

नीरा ने पाठ पढ़ लिया है।

(ग) **अपूर्ण भूत**—क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में होने का बोध होता है पर ये ज्ञात नहीं होता कि क्रिया समाप्त हुई अथवा नहीं, उसे अपूर्ण भूत कहते हैं; जैसे—

लोग समाचार सुन रहे थे।

(घ) **पूर्ण भूत**—जब क्रिया भूतकाल में पूरी हो चुकी हो, उसे पूर्ण भूत कहते हैं; जैसे—

नेहा खाना बना चुकी थी।

(ङ) **संदिग्ध भूत**—क्रिया के जिस रूप से कार्य के पूरा होने में संदेह हो उसे संदिग्ध भूत कहते हैं; जैसे—

बच्चे खाना खाकर सो गए होंगे।

(च) **हेतुहेतुमद भूत**—जब क्रिया का संपन्न होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो तो उसे हेतुहेतुमद भूत कहते हैं; जैसे—
यदि वर्षा होती तो फसल भी अच्छी होती।

2.

	अकर्मक	**सकर्मक**
(क)	अकर्मक क्रिया	
(ख)		सकर्मक क्रिया
(ग)	अकर्मक क्रिया	
(घ)		सकर्मक क्रिया
(ङ)	अकर्मक क्रिया	

3. (क) भविष्यत् काल (ख) वर्तमान काल
(ग) भविष्यत् काल (घ) भूतकाल (ङ) भूतकाल

4. (क) प्रशिक्षक छात्रों को अभ्यास करा रहे हैं।
(ख) इंजीनियर कामगारों से सड़क बनवा रहे हैं।
(ग) माँ बच्चे को सुला रही हैं।
(घ) माँ आया से बर्तन मँजवा रही हैं।

5. छात्र स्वयं करें।

6. छात्र स्वयं करें।

❑

14. अव्यय (Indeclinable)

❑ अभ्यास

1. (क) जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं वे **क्रिया-विशेषण** कहलाते हैं। उदाहरण—
चीता तेज दौड़ता है। कछुआ धीरे-धीरे चलता है।
पापाजी प्रतिदिन सैर करते हैं।

(ख) क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं—
(i) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (ii) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
(iii) कालवाचक क्रिया-विशेषण (iv) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

(i) **रीतिवाचक क्रिया-विशेषण**—जो क्रिया-विशेषण शब्द क्रिया के होने की रीति बताते हैं, वे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं; जैसे—
नीति चुपचाप चली गई।
उपरोक्त वाक्य में चुपचाप रीतिवाचक क्रिया-विशेषण शब्द है क्योंकि यह बताता है कि क्रिया कैसे हुई।

(ii) **स्थानवाचक क्रिया-विशेषण**—जो क्रिया-विशेषण शब्द क्रिया के होने के स्थान के विषय में बताते हैं, उन्हें स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे—

सामने देखकर चला करो।

उपरोक्त वाक्य में सामने स्थानवाचक क्रिया-विशेषण शब्द है; क्योंकि ये बताते हैं कि क्रिया कहाँ हुई।

(iii) **कालवाचक क्रिया-विशेषण**—जो शब्द क्रिया के काल की जानकारी देते हैं, वे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

हमें सदा सच्चाई का साथ देना चाहिए।

उपरोक्त वाक्य में सदा कालवाचक क्रिया-विशेषण शब्द हैं क्योंकि ये बताते हैं कि क्रिया कब हुई।

(iv) **परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण**—जो शब्द क्रिया की मात्रा की जानकारी देते हैं, वे परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

उतना खाओ जितना पचा सको।

इन वाक्यों में उतना एवं जितना परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण शब्द हैं क्योंकि ये बताते हैं कि क्रिया कितनी हुई।

(ग) जो अव्यय दो शब्दों, वाक्यांशों एवं वाक्यों को जोड़ते हैं, वे **समुच्चयबोधक** शब्द कहलाते हैं।

समुच्चयबोधक के दो भेद हैं—

(i) समानाधिकरण समुच्चयबोधक

(ii) व्यधिकरण समुच्चयबोधक

(घ) जो अव्यय शब्द हर्ष, शोक, आश्चर्य, भय आदि भावों को प्रकट करते हैं, वे विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते हैं। इनके बाद हमेशा विस्मयादिबोधक का चिह्न (!) लगा होता है। वाह!, अरे!, ठीक!, हे!, अरे!, हे!, हाय!, उफ!, आह!, ओह!, खबरदार!, सावधान!, छि-छि!, थू-थू!

2. (क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✓)

3. (क) वह एकाएक हँस पड़ी।

(ख) दीपक जल्दी-जल्दी जा रहा है।

(ग) नव्या नीचे खड़ी है।

(घ) नित्या कम बोलती है।

4. (क) उफ! (ख) अरे! (ग) छि: छि: (घ) सावधान! (ङ) शाबाश!

5. (क) और (ख) अत: (ग) ताकि (घ) वरन

6. छात्र स्वयं करें।

❑

15. विराम-चिह्न (Punctuation)

❒ अभ्यास

1. बातचीत करते वक्त, अपने भावों के अनुरूप हम अपनी वाणी में उतार-चढ़ाव लाते हैं। कभी हम अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए कुछ देर रुकते हैं। फिर अगला वाक्य बोलते हैं। लिखते समय इसे प्रकट करने हेतु कुछ चिह्नों का प्रयोग करते हैं, जिन्हें **विराम-चिह्न** कहते हैं। उदाहरण—

वर्षा, शिखा और नीति स्कूल गई है।

उपरोक्त वाक्य में , और । क्रमश: अल्पविराम और पूर्णविराम का प्रयोग किया गया। ये ही विराम चिह्न हैं।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✗) (च) (✓)

3.

चिह्न	नाम	चिह्न	नाम
(:-)	विवरण चिह्न	(,)	अल्पविराम
(०)	लाघव चिह्न	(!)	विस्मयादिबोधक चिह्न
(“ ”)	उद्धरण चिह्न	(?)	प्रश्नवाचक चिह्न
(-)	निर्देशक चिह्न	(।)	पूर्णविराम

4. अशोक भारत के महान सम्राटों में एक हैं। कलिंग युद्ध के पश्चात उसने युद्ध से तौबा कर ली, उसने बौद्ध धर्म अपना लिया और उसके प्रसार के लिए बहुत प्रयास किये। वह अपनी प्रजा को अपने बच्चों के समान समझता था। ❑

16. वाक्य-विचार (Syntax)

❒ अभ्यास

1. (क) शब्दों के व्यवस्थित तथा सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

वाक्य के दो अंग होते हैं—(i) उद्देश्य, (ii) विधेय।

उदाहरण—

राम क्रिकेट खेल रहा है।

उद्देश्य विधेय

(ख) वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, उसे सूचित करने वाले शब्द को **उद्देश्य** कहते हैं। ये वाक्य का कर्त्ता होता है। कभी कर्त्ता एक शब्द एवं कभी एक से अधिक शब्दों में भी होता है; जैसे—

माली पौधों में पानी डाल रहा है।
उपर्युक्त वाक्य में माली उद्देश्य है।
वाक्य में उद्देश्य या कर्त्ता के विषय में जो बताया या कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं; जैसे—

कुम्हार बर्तन बना रहा है।
उद्देश्य विधेय

उपर्युक्त वाक्य में बर्तन बना रहा है, विधेय है, क्योंकि यह वाक्य के कर्त्ता कुम्हार के बारे में बता रहा है।

(ग) कर्त्ता के साथ जब विशेषण जुड़कर उसे विस्तार प्रदान करते हैं, उसे उद्देश्य का विस्तार कहा जाता है; जैसे—

(क) **लड़का** गेंद से खेल रहा है। **छोटा लड़का** गेंद से खेल रहा है।
उद्देश्य उद्देश्य का विस्तार

(घ) (i) विधानवाचक (ii) निषेधवाचक (iii) आज्ञावाचक
(iv) प्रश्नवाचक (v) इच्छावाचक (vi) संदेहवाचक
(vii) संकेतवाचक (viii) विस्मयादिवाचक

(ङ) जिस वाक्य में एक से अधिक सरल वाक्य इस प्रकार जुड़े हों कि उनमें एक प्रधान उपवाक्य और अन्य आश्रित उपवाक्य हो, उसे **मिश्रित वाक्य** कहते हैं; जैसे—
मैं जैसे ही घर पहुँचा वर्षा शुरु हो गई।
जिस वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य योजक या समुच्चयबोधक अव्यय द्वारा जुड़े हों, उसे **संयुक्त वाक्य** कहते हैं; जैसे—
पिताजी बाजार गए और हमारे लिए फल लाए।

2. (क) निर्भया (ख) अवि (ग) शुचि (घ) मैं

3. (क) आज्ञावाचक (ख) इच्छावाचक (ग) संदेहवाचक (घ) आज्ञावाचक (ङ) विस्मयादिवाचक

❑

17. पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

❑ अभ्यास

1. (क) एक ही शब्द के समान शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं।
(ख) **अग्नि**—आग, हुताशन, ज्वाला, पावक, अनल।
(ग) **अमिय**—सोम, सुधा, पीयूष

2. (क) **असुर**—दैत्य, दानव, निशाचर
(ख) **अनल**—धूमकेतु, पावक, अग्नि
(ग) **पत्ता**—पत्र, किसलय, पर्ण
(घ) **इच्छा**—अभिलाषा, कामना, मनोकामना
(ङ) **समुद्र**—जलधि, सागर, रत्नाकर
(च) **बगीचा**—उद्यान, उपवन, वाटिका
(छ) **पंछी**—खग, विहग, पखेरू

3. (ख) तनया पाषण
(ग) चाकर सोम
(घ) रजनी

❑

18. विलोम शब्द (Antonyms)

❑ अभ्यास

1. (क) विपरीत अर्थवाले शब्द **विलोम शब्द** या **विपरीतार्थी शब्द** कहलाते हैं।
(ख) स्तुति शब्द का विलोम निन्दा है।
(ग) अर्वाचीन शब्द का विलोम शब्द प्राचीन है।

2. (क) स्फूर्ति (ख) उदय
(ग) सुगम (घ) प्रवर
(ङ) स्थिर (च) प्ररोह
(छ) जागरण (ज) विषम

3. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (v) (घ) (iii)
(ङ) (vi) (च) (ii) (छ) (vii)

❑

19. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

❑ अभ्यास

1. अनेक शब्दों के स्थान पर यदि एक सार्थक शब्द का उपयोग होता है तो कथन बहुत ही उत्तम और भावपूर्ण हो जाता है अर्थात् भाषा का सौन्दर्य बढ़ जाता है।

2. (क) समाचारवाचक (ख) पाश्चात्य (ग) अपेय (घ) अचिंत्य
(ङ) अदूरदर्शी (च) कर्मठ (छ) प्रतिलिपि

3. (क) (v) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (iii)
(ङ) (i)

❑

20. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)

❑ अभ्यास

1. मुहावरा एक ऐसा वाक्यांश होता है जो सामान्य एवं शाब्दिक अर्थ न देकर लाक्षणिक अर्थ का बोध कराता है। जिसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता। लोकोक्ति लोक जीवन की अभिव्यक्ति है। इसका प्रयोग प्राय: वाक्य के अंत में स्वतंत्र वाक्य के रूप में किया जाता है।

2. (क) **अंगार बनना**—नाराज होना
वाक्य प्रयोग—पुत्र को गलत संगत में पड़ता देखकर पिता का अंगार बनना सर्वथा उचित है।

(ख) **नमक मिर्च लगाना**—बढ़ा-चढ़ाकर कहना
वाक्य प्रयोग—आजकल तो समाचार चैनल खबरों को नमक मिर्च लगाकर दिखाते हैं।

(ग) **गुड़ गोबर होना**—बात बिगड़ना
वाक्य प्रयोग—अच्छा-खासा, आज हमारा मॉल जाने का कार्यक्रम बना था, लेकिन वर्षा ने सारा गुड़गोबर कर दिया।

(घ) **हवाई किले बनाना**—मात्र काल्पनिक योजनाएँ बनाना
वाक्य प्रयोग—सत्या कुछ नहीं करता लेकिन बिस्तर पर पड़े-पड़े हवाई किले बनाता रहता है।

(ङ) **भीगी बिल्ली बनना**—डर जाना
वाक्य प्रयोग—अध्यापक के कक्षा में आते ही अंकित जो शोर मचा रहा था भीगी बिल्ली बन गया।

(च) **आँच न आने देना**—कष्ट न होने देना
वाक्य प्रयोग—सच्चा मित्र वही होता है जो मुसीबत के समय मित्र पर आँच नहीं आने देता।

(छ) **आसमान सिर पर उठाना**—खूब शोर मचाना
वाक्य प्रयोग—अध्यापक के जाते ही छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

(ज) **उल्टी गंगा बहाना**—विपरीत कार्य करना
वाक्य प्रयोग—अपने ही शिक्षक को सीख देकर तुम आखिर उल्टी गंगा क्यों बहा रहे हो?

(झ) **खाक में मिलना**—नष्ट होना
वाक्य प्रयोग—भूकंप आने से कई इमारतें देखते ही देखते खाक में मिल गई।

3. (क) जमीन आसमान का अंतर है।
(ख) दिन-रात एक कर रहा है।
(ग) टका-सा जवाब दे देती है।
(घ) कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं।
(ङ) बाल-बाल बच गए।

4.

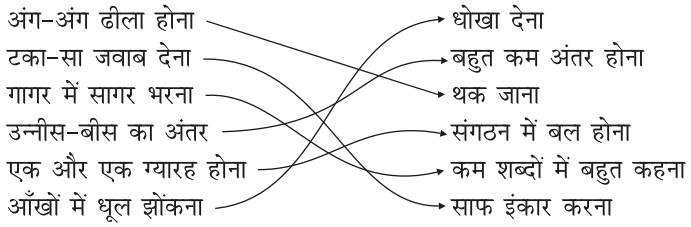

5. (क) हवा से बातें करने लगते हैं
(ख) लकीर समझना
(ग) मुँह में पानी आ गया
(घ) जी न चुराना

6. (क) लातों के भूत बातों से नहीं मानते
(ख) काला अक्षर भैंस बराबर
(ग) छोटा मुँह बड़ी बात
(घ) ऊँट के मुँह में जीरा
(ङ) होनहार बिरवान के होत चीकने पात

7. छात्र स्वयं करें।

❑

21. वर्तनी संबंधी सामान्य अशुद्धियाँ
(General Mistakes Related to Spelling)

❑ अभ्यास

1. (क) मुझ को आज मॉल जाना है।
(ख) तुम अपने पापा का नाम बताओ।
(ग) राजू की कमीज फट गई है।
(घ) एक गिलास दूध लाओ।
(ङ) आठ बजने में आठ मिनट हैं।

2.

अशुद्ध वर्तनी		शुद्ध वर्तनी	अशुद्ध वर्तनी		शुद्ध वर्तनी
ऊषा	—	उषा	अध्यामिक	—	आध्यात्मिक
शक्ती	—	शक्ति	ग्रहीत	—	गृहीत
केलाश	—	कैलाश	उज्जवल	—	उज्ज्वल
अतिथी	—	अतिथि	निरसता	—	नीरसता
प्राप्ती	—	प्राप्ति	प्रदर्शिनी	—	प्रदर्शनी
घन्टा	—	घण्टा	अकाश	—	आकाश
चरन	—	चरण	झूट	—	झूठ
अभ्योदय	—	अभ्युदय	निरस	—	नीरस
सर्जन	—	सृजन	उन्नती	—	उन्नति

❑

22. अलंकार (Figure of Speech)

❑ अभ्यास

1. (क) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को **अलंकार** कहते हैं। अलंकार के दो भेद हैं—(i) शब्दालंकार, (ii) अर्थालंकार।

(ख) जहाँ दो वस्तुओं में रूप, रंग एक गुण के आधार पर समता दिखायी जाए, वहाँ **उपमा** अलंकार होता है; जैसे—

काजल की रेखा सी कतार है खजूर की

यहाँ खजूर की कतार की उपमा काजल की रेखा से की जा रही है।

रानी रति के समान सुन्दरी है।

यहाँ रानी की उपमा कामदेव की पत्नि रति से की जा रही है।

(ग) जब किसी काव्य-पंक्ति में एक ही शब्द एक से अधिक बार आए और प्रत्येक शब्द के अर्थ में भिन्नता हो, वहाँ यमक अलंकार होता है; जैसे—

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर,

कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।

यहाँ मन शब्द दो बार आया है एवं दोनों का अर्थ भिन्न है। एक मन का अर्थ है—माला के दाने और दूसरे मन का अर्थ है—हृदय का।

2. (क) अनुप्रास (ख) उपमा (ग) अनुप्रास (घ) रूपक
(ङ) यमक (च) श्लेष (छ) रूपक (ज) श्लेष

3. छात्र स्वयं करें।

❑

23. अपठित बोध (गद्यांश एवं पद्यांश)
[Unseen Passages (Prose and Poetry)]

❒ अभ्यास

1. (क) लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर, 1904 को चंदोली जिले के एक शहर मुगलसराय में हुआ था।

(ख) शास्त्रीजी की माँ सरल स्वभाव की थीं।

(ग) शास्त्री जी जब डेढ़ वर्ष के थे तो पिता का स्वर्गवास हो गया। इन्हें मामा के पास रहना पड़ा जहाँ घर में झाड़ू लगाना, कपड़े धोना जैसे कार्य करने पड़े। अत: बाल जीवन कठिनाई में बीता।

(घ) शास्त्री जी के व्यक्तित्व में दृढ़ता माँ की सीख से आयी कि हार नहीं मानना ही जिंदगी का दूसरा नाम है।

(ङ) शास्त्री जी 9 जून, 1964 को प्रधानमंत्री बने।

2. (क) भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख क्रांतिकारियों में से एक थे।

(ख) भगतसिंह का जन्म 28 सितम्बर, 1907 को पंजाब के एक सिख परिवार में हुआ था।

(ग) सन् 1919 में जनरल डायर ने अमृतसर में जलियाँवाला बाग में गोलियाँ चलाईं तो वहाँ हजारों निरपराध और निहत्थे लोग मारे गए।

(घ) भगतसिंह को राजगुरू और सुखदेव के साथ 23 मार्च, 1931 को फाँसी दी गई।

(ङ) भगतसिंह समता आधारित समाज की स्थापना करना चाहते थे। वे इस विषय पर गहराई से अध्ययन एवं मनन करते थे।

3. (क) आज फिर से जवानी जागी है।

(ख) हम अपनी जीवन रूपी बगिया को उसका माली बनकर सुंदर बना सकते हैं।

(ग) हम जग में कायर नहीं बनना चाहते हैं।

(घ) हमारी जय-जयकार हर ओर होगी। ❑

24. अनुच्छेद-लेखन
(Paragraph Writing)

❒ अभ्यास

1. ईमानदारी

संकेत बिंदु—सर्वोत्तम आभूषण, व्यक्ति और समाज का कल्याण, भ्रष्टाचार से मुक्ति, देश का विकास, परिवार एवं विद्यालय का दायित्व।

ईमानदारी मानव जीवन का सर्वोत्तम आभूषण है। ईमानदार व्यक्ति में सत्य और विश्वास जैसे मूल्य स्वयं ही पनपते हैं। ईमानदार व्यक्ति अपना और समाज का कल्याण करता है। वह अपने कर्त्तव्यों का सही ढंग और ईमानदारी से अनुपालन करता है। देश को सेवा, व्यवसाय और उद्योग में ईमानदार व्यक्तियों की महती आवश्यकता है। इससे समाज के हित में न केवल योजनाएँ बन सकेंगी वरन् उनका भ्रष्टाचार से मुक्त होकर अनुपालन हो सकेगा। ईमानदार समाज बनाकर स्वयंमेव ही देश विश्व के विकसित देशों में शीघ्रतापूर्वक आ सकता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को ईमानदार बनाने का बीड़ा उठा ले तो एक ईमानदार समाज का निर्माण हो सकता है। ईमानदार समाज की नींव परिवार एवं विद्यालय रख सकता है। माँ एवं शिक्षक यदि बालक को ईमानदारी की शिक्षा देंगे तो एक ईमानदार समाज बन सकता है।

2. समानता

संकेत बिंदु—प्रत्येक व्यक्ति का हक, समानता कैसे प्राप्त हो सकती है, घोर असमानता की समाप्ति, सोवियत संघ एवं चीन में प्रयास, पूँजीवाद का प्रभाव।

समानता समाज का नैतिक आधार है। प्रत्येक व्यक्ति को सपने देखने का और उन्हें पूरा करने का हक है। ये तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति को समाज में समान अवसर प्राप्त हो सकें। समाज के संसाधनों और धन का समाज के सभी मनुष्य के हित में प्रयोग हो तभी समानता को प्राप्त किया जा सकता है। पूँजीवादी व्यवस्था में यह संभव नहीं है। यह समाजवादी एवं साम्यवादी व्यवस्था में ही संभव हो सकता है। यद्यपि यह व्यवहारिक रूप में बहुत कठिन कार्य है। हाँ, समाज में बहुत अधिक असमानता समाजवादी और साम्यवादी व्यवस्था में संभव नहीं है। जैसा अंतर हमारे हाथ की उँगलियों में है। इतनी ही असमानता इन व्यवस्थाओं में पायी जाती है। समानता को पूर्व सोवियत संघ और चीन के साथ अन्य देशों में लाने का प्रयास किया गया लेकिन इसमें आंशिक सफलता ही हाथ लगी। वर्तमान में समानता एक आदर्शवादी विचारधारा रह गई है। विश्व में पूँजीवादी व्यवस्था का ही प्रसार है। साम्यवादी देश चीन में भी पूँजीवाद को कुछ हद तक ग्रहण करके विकास किया जा रहा है।

3. भाईचारा

संकेत बिंदु—भाईचारे की आवश्यकता, आर्थिक समानता से प्राप्ति, सरकार का दायित्व, धर्म, भाषा, जाति, क्षेत्रीयता रोड़ा, भेदभाव की समाप्ति, भारत में चुनौती, सरकार का दायित्व।

भाईचारा समाज के लिए बहुत आवश्यक है। देश की एकता, अखण्डता और विकास के लिए भाईचारा होना आवश्यक है। भाईचारा समाज में तभी कायम हो सकेगा जब समाज में महँगाई, भ्रष्टाचार, अपराध और असमानता नहीं होगी। यदि समाज के बहुसंख्यक वर्ग को आर्थिक रूप से घोर परेशानी का सामना करना पड़ेगा तो उस समाज में भाईचारा होना कठिन है। सरकार का कर्त्तव्य है कि वह रोजगारपरक नीति अपनाए और समाज में आर्थिक रूप से बढ़ती खाई को कम करें। भाईचारा के मार्ग में धर्म, क्षेत्रीयता, भाषा, जाति जैसे मुद्दे भी रोड़े का कार्य करते हैं। इसका निराकरण

तभी किया जा सकता है जब समाज धर्म, भाषा, जाति और क्षेत्र के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव न हो। भारत जैसे देश में जिसमें अनेक धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्र हैं, वहाँ भाईचारा कायम रखना एक चुनौती है। फिर भी प्रत्येक सरकार अपनी ओर से भाईचारा कायम रखने का प्रयास करती है।

❑

25. संवाद-लेखन (Dialogue Writing)

❑ अभ्यास

1. माँ और बेटे के मध्य खाना खाने को लेकर संवाद

माँ—बेटा, खाना खा लो।
पुत्र—माँ, अभी मैं पढ़ रहा हूँ।
माँ—खाना खाकर पढ़ लेना, खाना ठंडा हो जाएगा।
पुत्र—खाने में क्या बनाया है?
माँ—तुम्हारी फेवरिट डिश राजमा, चावल, रोटी, खीर।
पुत्र—अभी, आया माँ।
माँ—कहो, कैसा लगा खाना?
पुत्र—माँ, हमेशा की तरह बहुत स्वादिष्ट।
माँ—लो, बेटा खीर और लो।
पुत्र—नहीं माँ, कल स्कूल ले जाऊँगा, फ्रिज में रख दीजिएगा।
माँ—ठीक है, बेटा, मैं तुम्हारे दोस्तों के लिए भी दे दूँगी।
पुत्र—ठीक है, माँ।

2. शिक्षिका और छात्र के मध्य छात्र के स्कूल देर से आने पर संवाद

शिक्षिका—अवि, तुम आज भी देर से आए हो, क्यों?
अवि—मैम, सॉरी, मैं आज देर से जगा था।
शिक्षिका—तुम आये दिन कोई-न-कोई बहाना बना देते हो।
अवि—मैम, मेरा घर स्कूल से काफी दूर है।
शिक्षिका—तुम से दूर से आने वाले कैसे समय से आते हैं।
अवि—मैम, मैं भी समय से आने का प्रयास करूँगा।
शिक्षिका—मैं, यह सुन-सुनकर थक चुकी हूँ। कल से तुम्हें समय पर स्कूल आना होगा।
अवि—जी, मैम।
शिक्षिका—यदि तुम स्कूल देर से आये तो तुम्हें सजा मिलेगी।
अवि—जी, मैम।

3. दुकानदार और ग्राहक के बीच कपड़ा खरीदने पर संवाद

ग्राहक—पैंट-शर्ट का कपड़ा दिखाइए।
दुकानदार—पहले शर्ट दिखा देता हूँ। यह विमल का कपड़ा है।
ग्राहक—यह कितने रुपये मीटर है?
दुकानदार—यह 150 रुपये मीटर है।
ग्राहक—थोड़ा और क्वॉलिटी में दिखा दीजिए।
दुकानदार—यह 200 रुपये मीटर है। ग्वालियर का है।
ग्राहक—ठीक है, इसमें से ढाई मीटर काट दीजिए।
दुकानदार—यह पेंट का कपड़ा है, ग्वालियर सूटिंग का है।
ग्राहक—यह कितने रुपये मीटर है?
दुकानदार—यह 400 रुपये मीटर है।
ग्राहक—ठीक है, 1.20 मीटर इसमें से दे दीजिए।
दुकानदार—लीजिए सर।

❑

26. नारा-लेखन (Slogan Writing)

❑ **अभ्यास**

1. 'देशभक्ति रहेगी रघ-रघ में
   कष्ट मिले चाहे पग-पग में।'
2. 'जनसंख्या पर रोक लगाएँगे
   देश को खुशहाल बनाएँगे।'
3. 'पर्यावरण सुरक्षित रखेंगे जब
   जन-जन स्वस्थ रहेंगे तब।'

❑

27. सूचना-लेखन (Notice Writing)

❑ **अभ्यास**

(क) विद्या ग्लोबल स्कूल, मेरठ
सूचना
23 दिसम्बर, 20____

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 27 दिसम्बर को विद्यालय से एक ट्रिप जोधपुर जा रहा है। यह ट्रिप तीन दिन का होगा। इच्छुक छात्र-छात्राएँ अपना नाम सांस्कृतिक अध्यापक को 25 दिसम्बर तक लिखा दें एवं 1100 रुपये जमा करा दें।

प्रधानाचार्य

अनुपमा सिरोही

(ख) विद्या ग्लोबल स्कूल, मेरठ

सूचना

14 दिसम्बर, 20____

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 15 व 16 दिसम्बर को विद्यालय में अवकाश रहेगा। जैसा कि आप जानते हैं कि 14 दिसम्बर, 20____ को विद्यालय का वार्षिक उत्सव है। इसके लिए शिक्षिकों और छात्रों ने अथक परिश्रम किया। अत: विश्राम हेतु यह निर्णय लिया गया है।

प्रधानाचार्य

अनुपमा सिरोही

❑

28. पत्र-लेखन (Letter Writing)

❑ अभ्यास

1. श्रीमान प्रधानाचार्य जी

विद्या ग्लोबल स्कूल

बागपत रोड, मेरठ।

दिनाँक 5 नवंबर, 20____

महोदया,

सविनय निवेदन है कि मेरे चचेरे भाई का विवाह 7 नवम्बर, 20____ को जयपुर में तय हुआ है। अतएव मुझे तीन दिन (6, 7 एवं 8 तारीख) का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रितिक

2. 12/2 ब्रह्मपुरी,

मेरठ।

दिनाँक 13 दिसम्बर ____

प्रिय मित्र,

तुम्हें यह जानकर हर्ष होगा कि मेरे बड़े भाई अभिषेक जैन का विवाह 27 दिसम्बर 20____ को निश्चित हुआ है। तुम्हें सपरिवार न्यौता भेज रहा हूँ। शादी का कार्ड एक-दो दिन में भेज दूँगा। मुझे आशा है कि तुम सपरिवार आकर हमें अपार खुशी प्रदान करोगे।

तुम्हारा मित्र
हर्षित

❑

29. निबंध-लेखन (Essay Writing)

❑ अभ्यास

1. रोजगारपरक शिक्षा

संकेत बिंदु—भारत में वर्तमान शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा का औचित्य, ज्ञानपरक शिक्षा भी जरूरी, रोजगारपरक शिक्षा के लाभ।

भारत एक विशाल श्रम शक्ति वाला देश है। भारत में वर्तमान शिक्षा, ज्ञानपरक शिक्षा की पद्धति पर आधारित है। इस शिक्षा को प्राप्त करके छात्र ज्ञानवान एवं विवेकवान तो बन रहे हैं लेकिन रोजगार के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं।

रोजगारपरक शिक्षा का औचित्य वर्तमान में जीवकोपार्जन हेतु जोर-शोर से चल रहा है। लेकिन वास्तविकता ये है कि भारत में ज्ञानपरक शिक्षा की कम-से-कम हाईस्कूल से पहले समाप्ति सम्भव नहीं हो पायी है। यह वास्तव में जरूरी भी है। किसी भी रोजगारपरक शिक्षा के लिए छात्र को आधारभूत शिक्षा की आवश्यकता होती है। अत: प्रारम्भ से ही मात्र 'रोजगार शिक्षा' देना न्यायोचित नहीं है। इसी कारण हाईस्कूल के बाद छात्रों को आई०टी०आई० की औद्योगिक शिक्षा भारत में उपलब्ध करायी जाती है। इंटर के बाद इंजीनियरिंग शिक्षा उपलब्ध करायी जाती है। ये केवल उन छात्रों को प्राप्त होती हैं जो प्रतियोगिता या अंकों के आधार पर प्रवेश प्राप्त करते हैं।

हाईस्कूल के पश्चात पाँच में से दो विषय अनिवार्य रूप से रोजगारपरक शिक्षा के होने चाहिए जिससे रोजगार हेतु 2 वर्ष प्रत्येक छात्र को रोजगार पाने के लिए कुशलता प्राप्त करने में मदद कर सकें। रोजगारपरक शिक्षा भारत में शिक्षित रोजगारी की दर को घटा सकेंगी वहीं प्रौद्योगिक शिक्षा संस्थानों का बोझ बढ़ने से रोकेगी। सरकार द्वारा पूरे देश में स्किल इंडिया जैसे प्रोग्रामों पर भी दबाव कम होगा। छात्रों को समय से रोजगार प्राप्त हो सकेगा। छात्रों में बेरोजगारी से बढ़ने वाले असंतोष पर असुरक्षा को भी कम किया जा सकेगा। यह देखा गया है कि बेरोजगार छात्र विशेषकर शिक्षित छात्र अनेक प्रकार के अपराधों में लिप्त पाये जा रहे हैं। इससे अपराध दर में भी कमी आयेगी।

समय से प्रौद्योगिक शिक्षा हाईस्कूल के पश्चात देने का सर्वाधिक लाभ ये है कि इस उम्र पर ग्रहण शक्ति अच्छी होती है और रोजगार पाने का दबाव भी नहीं होता है। अत: 2 विषयों में रोजगारपरक शिक्षा अच्छे अंक लाने और रोजगार प्राप्ति की आशा और विश्वास से नयी पीढ़ी के जीवन को संवार सकती है।

2. जीवन में मूल्यों का महत्व

संकेत बिंदु—मानव कहलाने का अधिकारी, समाज के प्रति समर्पित वर्ग, पूँजीवादी व्यवस्था में भी राहत, दायित्व की भावना, विश्व का सिरमौर।

मानव, मानव कहलाने का अधिकारी तभी बनता है, जब उसमें मानवीय मूल्यों का समावेश हो। ईमानदारी, सत्य, दयालुता और परोपकारिता जैसे मूल्य, मानव को गरिमा प्रदान करते हैं। इन मूल्यों के बल पर ही वह समाज को एक दिशा देता है। मात्र अपने लिए ही उच्च स्थान हासिल करना ही सर्वश्रेष्ठ विजय नहीं है। सच्ची मानवता ये है कि प्रत्येक व्यक्ति को एक स्तरीय जीवन की प्राप्ति हो इसमें मानव की सर्वश्रेष्ठ विजय छिपी है। यदि आप देश के एक नेता हैं तो आपका कर्त्तव्य है कि समाज के बहुसंख्यक समाज के उत्थान हेतु योजनाएँ बननी चाहिए। यदि मानव में मानवीय मूल्यों का समावेश होगा तो समाज से भ्रष्टाचार, अपराध, कालाबाजारी, मिलावट और धोखाधड़ी की समस्याएँ स्वयंमेव समाप्त हो जाएँगी।

समाज में शोषण एक बहुत बड़ी समस्या है। मानव-मानव के शोषण में लिप्त है। मेहनतकश वर्ग इससे सर्वाधिक त्रस्त है जो वेतनभोगी है। वह काफी परिश्रम के बावजूद जीने लायक जीवन मुश्किल से प्राप्त कर पाता है। यदि समाज में मानवीय मूल्यों से सुसज्जित रोजगारदाता होंगे तो निश्चित रूप से स्थिति में अंतर आएगा।

ये सत्य है कि पूँजीवादी व्यवस्था में गलाकाट प्रतियोगिता में टिके रहने के लिए श्रम को उतना नहीं दिया जा सकता, जितने का वह अधिकारी है। फिर भी रोजगारदाता से मानवीय व्यवहार, उदारता और मानवीय परिस्थितियों में कार्य करने की सुविधाओं की आशा मजदूर वर्ग कर सकता है।

मूल्यों के समावेश में सेवा, व्यवसाय और उद्योग में स्वयंमेव गुणवत्ता आ सकती है क्योंकि तब एक दायित्व की भावना का स्वयं ही उदय होगा जैसा कि प्राय: एक मानवीय मूल्यों से सज्जित व्यक्ति में देखा जाता है।

मानवीय मूल्यों के समावेश से व्यक्ति की दैनिकचर्या व्यवस्थित हो सकती है। उसका खानपान, आचार व्यवहार तामसिक न होकर सात्विक होने की सम्भावना ज्यादा है। वह मांसाहार को पसंद करने वाला नहीं होगा क्योंकि वह पशुओं पर भी दया करेगा। भगवान महावीर द्वारा दी गई शिक्षा 'जियो और जीने दो' को जीवन में धारण कर पशु और मानव के लिए दयालु बनेगा।

मूल्यों से सज्जित व्यक्ति देश को विश्व का सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र बना सकते हैं। हमें सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, गांधीजी, नेहरू, सरदार पटेल, लाल बहादुर शास्त्री जैसे सपूत प्राप्त हो सकेंगे।

3. ईमानदारी

छात्र स्वयं करें। ❑